शैक्षिक आय से आप क्या समझते हैं?

शैक्षिक आय के स्त्रोतो का विश्लेषण

शिक्षा के नये स्त्रोत

वर्तमान समय में शिक्षा के महत्व से कोई इन्कार नहीं कर सकता है। शिक्षा राष्ट्र,समाज, व्यक्ति सभी के लिए एक आवश्यकता बन गयी है। शिक्षा के माध्यम से ही मानव के अन्तर्निहित गुणों को बाहर लाया जाता है जिससे वह मानवता तथा समाज की भलाई के लिए अपना योगदान दे सकें। शिक्षा से ही मानव में निर्णय क्षमता का विकास होता है तथा वह शिक्षा से ही इस योग्य बनता है कि सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, वैज्ञानिक व औद्योगिक क्षेत्रों में राष्ट्र के अनुकूल निर्णय ले सकें। शिक्षा के इसी महत्व के कारण प्रत्येक राष्ट्र की सरकार प्रयत्न करती है कि वह अपने राष्ट्र की जनता के लिए शिक्षा के आधुनिक पाठयक्रम, शिक्षा के स्रोत आदि में वृद्धि करें तथा इस हेतु वह अपनी राष्ट्रीय आय का एक बड़ा हिस्सा शिक्षा के मद पर व्यय करता है। स्वतन्त्रता मिलने के बाद हमारी सरकार ने भी शिक्षा के क्षेत्र में बहुत धन व्यय किया तथा अनेक योजनायें इस उद्देश्य हेतु बनाई ताकि शिक्षा का चहँमुखी विकास हो सके। इसके अन्य कारण भी थे एक प्रमुख कारण था हमारे संविधान में भी सभी व्यक्तियों को बिना किसी भेदभाव के शिक्षा के समान अवसर देने की प्रतिबद्धता तथा प्राथमिक शिक्षा निःशुल्क तथा अनिवार्य रूप से देने का प्रावधान करना। दूसरा प्रमुख कारण था शिक्षा का विकास करके राष्ट्र को प्रगति के पथ पर आगे बढ़ाने का निश्चय।

शैक्षिक आय का अर्थ

किसी एक वित्तीय वर्ष में शिक्षा से जुड़े शैक्षिक कार्यों को सम्पन्न कराने के लिए जो धन प्राप्त किया जाता है उसे उस वर्ष की शैक्षिक आय कहते हैं तथा जिन साधनों, अभिकरणों, व मरदों से यह प्राप्त होती है उसे शैक्षिक आय के स्रोत कहते हैं।

शैक्षिक आय के स्रोत दो प्रकार के होते है। 1. सार्वजनिक स्त्रोत 2. निजी स्त्रोत

सार्वजनिक स्त्रोत

जो आय सार्वजनिक स्त्रोत से प्राप्त होती है उसे सार्वजनिक शैक्षिक आय कहते हैं। ये स्त्रोत निम्न प्रकार के होते हैं।

(1) केन्द्र सरकार द्वारा प्राप्त आय- शैक्षिक आय के सार्वजनिक स्त्रोतों में केन्द्र सरकार है। केन्द्र सरकार अपनी आय का एक भाग शिक्षा पर व्यय करती है। तथा राज्यों को भी इस सम्बन्ध में सहायता देती है। केंद्र द्वारा शासित राज्यों में शिक्षा पर होने वाले प्रतिदिन व्यय को कहन किया जाता है। माध्यमिक स्तर पर शिक्षा को प्रोत्साहन देने के लिए एन.सी.आर. टी. के माध्यम से केन्द्र शिक्षा का प्रसार करता है तथा इस हेतु सहायता करता है तथा विश्वविद्यालय स्तर पर शिक्षा का प्रसार व उन्नत बनाने हेतु विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के द्वारा सहायता दी जाती है। इसी प्रकार शिक्षा के मद में केन्द्र सरकार पंचवर्षीय योजनाओं के द्वारा राज्यों को शिक्षा का प्रसार करने हेतु अनुदान देती है।

(2) राज्य सरकार द्वारा प्राप्त आय- राज्य सरकार भी शिक्षा के प्रचार तथा प्रसार के लिए अनेक स्तरों पर धन व्यय करती है। इस धन की आपूर्ति को एक तो केन्द्र सरकार द्वारा प्राप्त सहायता से पूरा किया जाता है तथा दूसरे राज्य स्वयं अपनी आय का एक हिस्सा इस हेतु व्यय करती है। राज्य सरकारी शिक्षण संस्थाओं को व्यय के लिए धन उपलब्ध कराता है तथा साथ ही निजी शैक्षिक संस्थाओं को भी वित्तीय अनुदान देता है।

(3) स्थानीय शासन से प्राप्त आय- स्थानीय शासन भी सरकारी अनुदान, कर तथा अन्य मदों से प्राप्त आय से शिक्षा के प्रचार-प्रसार हेतु कार्य करते हैं। स्थानीय स्तर पर भी शासन प्रशासनिक दृष्टि से कर आदि लगाता है जिनसे प्राप्त आय भी अप्रत्यक्ष रूप से शैक्षिक कार्यों हेतु-भी प्रयोग की जाती है।

(4) प्रबन्ध कमेटी द्वारा प्रदान धन- अनेक शैक्षिक संस्थायें निजी प्रबन्धन कमेटियों द्वारा संचालित होती है तथा इन निजी प्रबन्धन कमेटियों का यह दायित्व है कि वे इन संस्थाओं को आवश्यकतानुसार इन्हें अनुदान देती रहेंगी लेकिन आमतौर पर यह ही देखा जाता है कि इन कमेटियों के द्वारा अपने धन का प्रयोग नहीं किया जाता है तथा सरकार जो अनुदान इन्हें व्यय करने के लिए देती है वह भी आँकड़ों की जादूगरी से सब इन संस्थाओं के सदस्यों की जेब में ही चला जाता है।

(5) विदेशों से प्राप्त सहायता- शैक्षिक कार्यों के लिए विदेशों से भी सहायता प्राप्त होती है विदेशों से शिक्षक हमारे यहाँ आकर अपने व्याख्यान द्वारा हमारे छात्रों , को मार्ग-दर्शन देते है तथा अनेक शैक्षिक तकनीक, उपकरणों, पुस्तकों तथा अन्य शैक्षिक साधनों को प्रदान करते हैं। किसी शोध अथवा विशेष कार्यक्रम के आयोजन के लिए धन की व्यवस्था विदेशी संस्थाओं अथवा विदेशी सरकारों के द्वारा प्रदान की जाती है। विदेशों में अध्ययन हेतु तथा शोध हेतु भी छात्रों को छात्रवृत्ति प्रदान की जाती है तथा शैक्षिक टूर के माध्यम से छत्रों को दूसरे देशों के टूर पर भेजा जाता है। वह सभी कार्य आय के सार्वजनिक स्वोतों में आते है।

आय के निजी स्त्रोत

(1) विद्यालय की फीस- आय के निजी स्त्रोतों में विद्यालय के रूप में प्राप्त धन प्रमुख है। प्रत्येक माह शुल्क के रूप में विद्यालयों को धन मिलता है जिसे वे शिक्षा के विकास हेतु ही व्यय करते हैं। सरकारी विद्यालयों में शिक्षा का शुल्क नाममात्र का है परन्तु निजी शिक्षण संस्थायें लगातार फीस वृद्धि कर 'ही है तथा कई मामलों में यह देखा जाता है कि निजी शिक्षण संस्थान शुल्क, से प्राप्त आय को शिक्षा पर व्यय न करके प्रबन्धन कमेटी के सदस्यों आदि पर व्यय करते हैं।

(2) निजी धन- निजी धन को प्राभूत धन भी कहते हैं। यह धन शिक्षण संस्थाओं का अपना धन होता है तथा इस धन से प्रप्त ब्याज से ही विद्यालयों के खर्च चलते हैं। अनेक शिक्षण संस्थान इस प्रकार के हैं जो अपनी भूमि पर अपना भवन बनाकर तथा अपनी आय पर चलते हैं।

(3) दान- शिक्षण संस्थाओं को धन की सहायता दान के रूप में भी मिलती है। अनेक स्वयं सेवी संस्थान तथा बहुत से धनी व्यक्ति भी दान के रूप में बहुत सा धन दे जाते हैं। कुछ व्यक्तियों द्वारा अपनी धन सम्पत्ति, भवन, जमीन आदि विद्यालय के लिए दान दे देते हैं तथा कुछ व्यक्ति बड़े बुजुर्गों के नाम पर विद्यालय में कोई कक्ष,भवन, प्याऊ अथवा अन्य किसी का निर्माण करा देते है।

(4) अन्य स्त्रोत- विद्यालय के निजी स्त्रोतों से प्राप्त आय में प्रबन्ध कमेटी द्वारा बैंक में जमा धन पर मिलने वाला ब्याज और विद्यालय की इमारत में दुकानों आदि से प्राप्त होने वाली आय आदि भी शामिल है।

शिक्षाशस्त्र

महत्वपूर्ण लिंक

- ई-लर्निंग का अर्थ | ई-लर्निंग की प्रकृति एवं विशेषतायें | ई-लर्निंग के विविध रूपों एवं शैलियों का उल्लेख
- ओवरहेड प्रोजेक्टर पर संक्षिप्त लेख | ओवरहेड प्रोजेक्टर का उपयोग | ओवरहेड प्रोजेक्टर की सीमायें

- आगमन विधि का अर्थ | निगमन पद्धति का अर्थ | आगमन विधि तथा निगमन पद्धति के गुण एवं दोष
- शिक्षा का अर्थ | शिक्षा की प्रमुख परिभाषाएँ | शिक्षा की विशेषताएँ | Meaning of education in Hindi | Key definitions of education in Hindi | Characteristics of education in Hindi
- शिक्षा की अवधारणा | भारतीय शिक्षा की अवधारणा | Concept of education in Hindi | Concept of Indian education in Hindi
- शिक्षा के प्रकार | औपचारिक, अनौपचारिक और निरौपचारिक शिक्षा | औपचारिक और अनौपचारिक शिक्षा में अन्तर
- शिक्षा के अंग अथवा घटक | Parts or components of education in Hindi
- शिक्षा के विभिन्न प्रकार | शिक्षा के प्रकार या रूप | Different types of education in Hindi | Types or forms of education in Hindi
- निरौपचारिक शिक्षा का अर्थ तथा परिभाषा | निरौपचारिक शिक्षा की विशेषताएँ | निरौपचारिक शिक्षा के उद्देश्य
- शिक्षा के प्रमुख कार्य | शिक्षा के राष्ट्रीय जीवन में क्या कार्य | Major functions of education in human life in Hindi | What work in the national life of education in Hindi
- वर्धा बुनियादी शिक्षा | वर्धा बुनियादी शिक्षा के सिद्धांत | बुनियादी शिक्षा के उद्देश्य | वर्धा शिक्षा योजना के गुण - दोष
- राज्य के शैक्षिक कार्यों का वर्णन | शैक्षिक अभिकरण के रूप में राज्य के कार्यों का वर्णन कीजिये
- शैक्षिक अभिकरण के रूप में विद्यालय के कार्य | शैक्षिक अभिकरण के रूप में विद्यालय के कार्यों का वर्णन कीजिये
- विद्यालय को शिक्षा का प्रभावशाली अभिकरण बनाने के उपाय | विद्यालय को शिक्षा का प्रभावशाली अभिकरण बनाने के उपायों का वर्णन कीजिये
- शैक्षिक अभिकरण के रूप में परिवार के कार्य | Family functions as an educational agency in Hindi
- नवाचार का अर्थ | नवाचारों को लाने में शिक्षा की भूमिका | नवाचार की विशेषतायें
- नवाचार के मार्ग में अवरोध तत्व | शिक्षा में 'नवीन प्रवृत्तियों (नवाचार) के मार्ग में अवरोध तत्वों' का वर्णन
- दर्शन का अर्थ | दर्शन की परिभाषाएं | दर्शन का अध्ययन क्षेत्र
- गांधी जी का शिक्षा दर्शन - आदर्शवाद, प्रयोजनवाद और प्रकृतिवाद का समन्वय है।
- शिक्षा में महात्मा गाँधी का योगदान या शैक्षिक विचार | गाँधीजी के शिक्षा दर्शन से आप क्या समझते हैं?
- विवेकानन्द का शिक्षा दर्शन शिक्षाशास्त्री के रूप में | विवकानन्द के अनुसार शिक्षा के पाठ्यक्रम और शिक्षण विधियां
- मानव निर्माण शिक्षा में स्वामी विवेकानन्द का योगदान | मानव निर्माण शिक्षा के प्रमुख उद्देश्य
- आदर्शवाद में शिक्षा के उद्देश्य | आदर्शवाद में शिक्षा के सम्प्रत्यय
- जॉन डीवी के प्रयोजनवादी शिक्षा | जॉन डीवी की प्रयोजनवादी शिक्षा का अर्थ
- रूसो की निषेधात्मक शिक्षा | निषेधात्मक शिक्षा क्या है रूसो के शब्दों में बताइये
- आदर्शवाद की परिभाषा | आदर्शवाद के मूल सिद्धान्त
- सुकरात का शिक्षा दर्शन | सुकरात की शिक्षण पद्धति
- प्रकृतिवाद में रूसो एवं टैगोर का योगदान | प्रकृतिवाद में रूसो का योगदान | प्रकृतिवाद में टैगोर का योगदान
- प्रकृतिवाद क्या है | प्रकृतिवादी शिक्षा की प्रमुख विशेषताएँ | प्रकृतिवादी पाठ्यक्रम के सामान्य तत्व
- प्रकृतिवाद में रूसो का योगदांन | रूसो की प्रकृतिवादी विचारधारा
- प्रयोजनवाद का अर्थ | प्रयोजनवाद दर्शन की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन

- प्रयोजनवाद के शिक्षा के उद्देश्य | प्रयोजनवाद तथा शिक्षण-विधियाँ | प्रयोजनवाद के अनुसार शिक्षा-पाठ्यक्रम
- प्रयोजनवाद और प्रकृतिवाद मे तुलना | प्रकृतिवादी दर्शन की विशेषताएँ | प्रयोजनवाद की विशेषताएं
- आधुनिक शिक्षा पर प्रयोजनवाद के प्रभाव का उल्लेख
- आधुनिक शिक्षा पर प्रकृतिवाद का प्रभाव | आधुनिक शिक्षा पर प्रकृतिवाद क्या प्रभाव पड़ा
- प्रयोजनवाद में पाठ्यक्रम के सिद्धान्त | प्रयोजनवादी पाठ्यक्रम पर संक्षिप्त लेख | प्रयोजनवाद में पाठ्यक्रम की विषयवस्तु का वर्णन
- ओशो का शैक्षिक योगदान | ओशो के शैक्षिक योगदान पर संक्षिप्त लेख
- फ्रेरा का शिक्षा दर्शन | फ्रेरा का शैक्षिक आदर्श | Frara's education philosophy in hindi | Frara's educational ideal in hindi
- इवान इर्लिच का जीवन परिचय | इर्लिच का शैक्षिक योगदान | Ivan Irlich's life introduction in hindi | Irlich's educational contribution in hindi
- जे0 कृष्णमूर्ति के अनुसार शिक्षा के उद्देश्य | जे0 कृष्णमूर्ति के अनुसार शिक्षा के कार्य
- जे. कृष्णामूर्ति के दार्शनिक विचार | जे. कृष्णामूर्ति के दार्शनिक विचारों का वर्णन
- राष्ट्रीय एकता व भावात्मक एकता का सम्बन्ध | भारत में राष्ट्रीय एकता का संकट | निवारण हेतु कोठारी आयोग के सुझाव
- राष्ट्रीय एकता के मार्ग में मुख्य बाधाएं | शिक्षा द्वारा राष्ट्रीय एकता की बाधाओं को दूर करने के उपाय
- मूल्य शिक्षा के विकास में परिवार की भूमिका का वर्णन | Describe the role of family in the development of value education in Hindi
- मूल्य शिक्षा का अर्थ | मूल्य शिक्षा की आवश्यकता | मूल्य शिक्षा की अवधारणा
- भावनात्मक एकता के विकास में शिक्षा किस प्रकार सहायक हो सकती है? | बच्चों को भावनात्मक एकता के लिए शिक्षा देना क्यों आवश्यक है?
- पर्यावरण शिक्षा का अर्थ | पर्यावरण शिक्षा के लक्ष्य | पर्यावरण शिक्षा के उद्देश्य एवं पाठ्यक्रम
- भावात्मक एकता के लिए भावात्मक एकता समिति द्वारा दिये गये सुझावों का वर्णन कीजिए।
- राष्ट्रीय एकता का अर्थ | राष्ट्रीय एकता की प्राप्ति के लिए उपाय | राष्ट्रीय एकीकरण में शिक्षक की भूमिका
- भावात्मक एकता का अर्थ | भावात्मक एकता के स्तर | भावात्मक एकता के विकास में शिक्षा के कार्य | राष्ट्रीय एकता भावात्मक एकता के सम्बन्ध
- अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना क्या है? | शिक्षा किस प्रकार अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना का विकास करने में सहायक हो सकती है? | अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना के बाधक तत्वों का उल्लेख कीजिए।
- भारत में शिक्षा का भूमण्डलीकरण किस प्रकार गति प्राप्त कर रहा है? | भूमण्डलीकरण क्या है?
- संचार का अर्थ | संचार के प्रकार | मीडिया एवं शिक्षा के मध्य सम्बन्ध | जनसंचार के साधनों का महत्व
- शैक्षिक अर्थशास्त्र का क्षेत्र | scope of educational economics
- शिक्षा के अर्थशास्त्र के शिक्षण के उद्देश्य | Objectives of teaching economics of education in Hindi
- शिक्षा के अर्थशास्त्र की संकल्पना | भारत के अर्थशास्त्र की संकल्पना | Concept of semiology of education in Hindi
- शिक्षा के अर्थशास्त्र का क्षेत्र | विकासशील अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्य में शिक्षा के अर्थशास्त्र की भूमिका
- भारतीय अर्थव्यवस्था की प्रकृति | Nature of Indian economy in hindi
- अर्थव्यवस्था के प्रकार | Type of economy in hindi

- शिक्षा का निवेश तथा उपयोग के रूप में वर्णन | Description of education as investment and use in Hindi

sarkariguider.com

sarkariguider.com